Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MPPSC

राज्य सिविल सेवाएँ

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग - 5

भारतीय अर्थव्यवस्था

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत	1
2	मुद्रा, मुद्रा आपूर्ति और मौद्रिक नीति	10
3	वित्तीय मध्यस्थ	19
4	राजकोषीय नीति और कराधान	30
5	कृषि	39
6	उद्योग	53
7	सेवा क्षेत्र	65
8	अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठन	71

1 CHAPTER अर्थव्यवस्था के मूल सिद्धांत

आर्थिक वृद्धि और आर्थिक विकास

आर्थिक वृद्धि:

- किसी देश में एक निश्चित अवधि के दौरान वस्तुओं और सेवाओं के वास्तविक उत्पादन तथा उनके मौद्रिक मूल्य में हुई वृद्धि ।
- इसे सकल घरेलू उत्पाद (GDP) या प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि जैसे मात्रात्मक कारकों द्वारा मापा जाता है।
- यह राष्ट्रीय या प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि दर्शाती है, लेकिन यह जरूरी नही की जीवन की गुणवत्ता और समानता में भी सुधार हुआ हो ।

आर्थिक विकास:

- आर्थिक विकास का आशय आय, बचत और निवेश में वृद्धि के साथ-साथ देश की सामाजिक-आर्थिक संरचना में प्रगतिशील बदलाव (जैसे संस्थागत और तकनीकी बदलाव) से है ।
- इसे गुणात्मक मापदंडों जैसे मानव विकास सूचकांक (HDI), लिंग आधारित सूचकांक, मानव गरीबी सूचकांक (HPI), शिशु मृत्यु दर, साक्षरता दर आदि द्वारा मापा जाता है।
- यह किसी देश में जीवन की गुणवत्ता में सुधार को दर्शाता है।

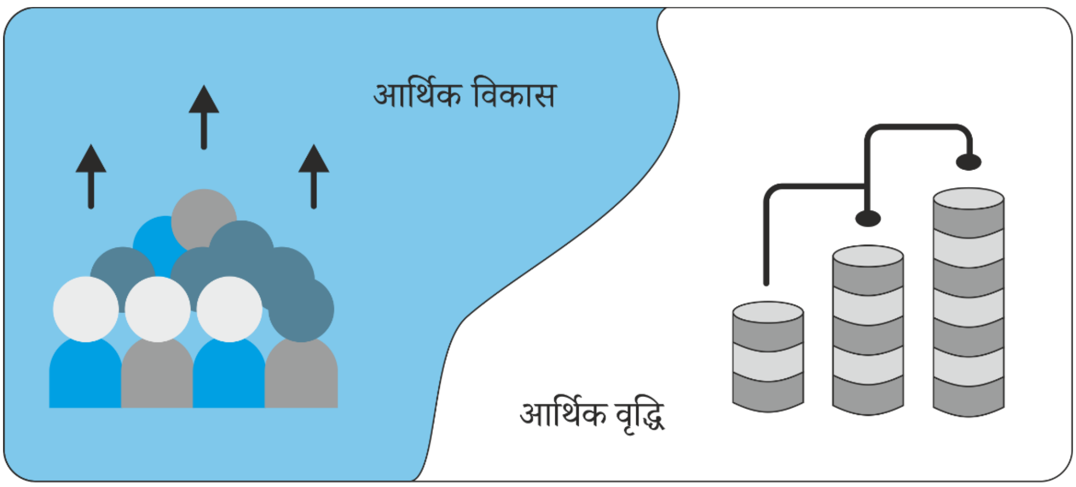

राष्ट्रीय आय

राष्ट्रीय आय से तात्पर्य एक निश्चित समय अवधि (आमतौर पर एक वित्तीय वर्ष) में किसी अर्थव्यवस्था द्वारा उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं के कुल मौद्रिक मूल्य का मापन है।

राष्ट्रीय आय के विभिन्न पहलू हैं, जैसे:

GDP (सकल घरेलू उत्पाद)

GNP (सकल राष्ट्रीय उत्पाद)

NNP (शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद)

प्रति व्यक्ति आय,

व्यक्तिगत आय,

प्रयोज्य आय (Disposable Income)।

1. सकल घरेलू उत्पाद (GDP)

- GDP किसी वित्तीय वर्ष में देश की घरेलू सीमा के अंदर रहने वाले नागरिकों (देशी और विदेशी दोनों) द्वारा उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के कुल मूल्य को दर्शाता है।
- घरेलू सीमा का अर्थ है देश की भौगोलिक सीमाओं के भीतर की जाने वाली सभी आर्थिक गतिविधियां।
- भारत में इसका आकलन वित्तीय वर्ष (1 अप्रैल से 31 मार्च) के आधार पर किया जाता है।
- GDP की गणना केंद्रीय सांख्यिकी संगठन (CSO), जो सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) के अधीन है, द्वारा की जाती है।
- यह एक 'मात्रात्मक अवधारणा' है जो देश की अर्थव्यवस्था की आंतरिक क्षमता को दर्शाती है।

GDP की सीमाएं

- मात्रात्मक है, गुणात्मक नहीं: GDP केवल संख्या में वृद्धि दिखाती है, लेकिन जीवन स्तर में सुधार का संकेत नहीं देती।
- पूंजीगत लाभ शामिल नहीं: पूंजीगत लाभ (Capital Gains) को इसमें शामिल नहीं किया जाता।
- शामिल करने और बाहर करने का मुद्दा: कुछ आर्थिक गतिविधियों को शामिल करने या बाहर करने को लेकर विवाद रहता है।
- सीमित परिधि: GDP केवल देश की सीमाओं के भीतर की आर्थिक गतिविधियों को मापती है, लेकिन विदेश में रहने वाले नागरिकों के योगदान को नजरअंदाज करती है, जिससे वैश्विक अर्थव्यवस्था में देश की विशुद्ध आर्थिक क्षमता स्पष्ट नहीं हो पाती है।
- आय वितरण की अस्पष्टता: GDP यह नहीं दिखाती कि आय समाज में कैसे वितरित है।
- पुरानी वस्तुएं शामिल नहीं : GDP केवल उत्पादित नई वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को मापती है। पुरानी वस्तुओं से जुड़े लेनदेन, जैसे कि उपयोग की गई कारों या फर्नीचर का पुनर्विक्रय, GDP गणना में शामिल नहीं हैं।
  कई महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियाँ को नजरअंदाज करती है: घरेलू कार्य (जैसे बच्चों या बुजुर्गों की देखभाल) जैसी कई महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधियां GDP में शामिल नहीं होती है।

GDP की गणना के तरीके

GDP गणना के तरीके		
व्यय विधि उपभोग (C) + निवेश (I) + सरकारी व्यय (G) + शुद्ध निर्यात (अर्थात निर्यात - आयात) सूत्र: C + I + G + (X – M)	आय विधि किराया + वेतन(मजदूरी) + ब्याज + लाभ	मूल्य वर्धित/उत्पादन विधि सभी वस्तुओं और सेवाओं का अंतिम मूल्य – मध्यवर्ती लागत

GDP के प्रकार	
नाममात्र GDP (Nominal GDP) ➢ जब GDP में शामिल वस्तुओं और सेवाओं का मूल्यांकन वर्तमान वर्ष के मूल्यों पर किया जाता है, तो इसे चालू कीमतों पर GDP या नाममात्र GDP कहा जाता है।	वास्तविक GDP (Real GDP) ➢ जब GDP में शामिल वस्तुओं और सेवाओं का मूल्यांकन आधार वर्ष की कीमतों पर किया जाता है, तो इसे स्थिर कीमतों पर GDP या वास्तविक GDP कहा जाता है। ➢ वास्तविक GDP में वृद्धि का मतलब है वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन में वृद्धि। ➢ इसलिए, स्थिर कीमतों पर GDP (वास्तविक GDP) का आकलन अर्थव्यवस्था के आर्थिक प्रदर्शन की सही स्थिति दर्शाता है।

GDP गणना के विभिन्न पहलू	
GDP डिफ्लेटर ➢ यह वास्तविक GDP और नाममात्र GDP का अनुपात है। ➢ यह दर्शाता है कि आधार वर्ष से चालू वर्ष की कीमतों में कितनी वृद्धि हुई है। ➢ यह मुद्रास्फीति (Inflation) का मापन है और	GDP वृद्धि दर ➢ यह मापती है कि अर्थव्यवस्था कितनी तेजी से बढ़ रही है। ➢ यह लगातार दो वर्षों या तिमाहियों में GDP के परिवर्तन को मापती है। ➢ वास्तविक GDP की वृद्धि दर $= \frac{(GDP_{\text{वर्तमान}} - GDP_{\text{पूर्व}})}{GDP_{\text{पूर्व}}} \times 100$

Unleash the topper in you

CPI (उपभोक्ता मूल्य सूचकांक) और WPI (थोक मूल्य सूचकांक) की तुलना में अधिक सटीक और व्यापक होता है। ➢ हालांकि, यह कम प्रचलित है क्योंकि इसे तिमाही (quarterly) आधार पर जारी किया जाता है, जबकि CPI और WPI को मासिक (monthly) आधार पर जारी किया जाता है।	
बाजार मूल्य पर GDP (GDPMP) ➢ (GDP_{MP}) = कारक लागत (FC) पर शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP_{FC}) + मूल्यह्रास + शुद्ध अप्रत्यक्ष कर	कारक लागत पर GDP_{GDPFC} ➢ GDPMP– अप्रत्यक्ष कर + सब्सिडी

2. शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP)

➢ यह किसी वित्तीय वर्ष के दौरान किसी देश की घरेलू सीमा के भीतर उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मुद्रा मूल्य है, और इसमें मूल्यह्रास (Depreciation) शामिल नहीं होता है।

शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP) = सकल घरेलू उत्पाद (GDP) – मूल्यह्रास

➢ NDP हमेशा GDP से कम होगी ।

➢ मूल्यह्रास की विभिन्न दरों के कारण NDP का उपयोग वैश्विक स्तर पर नहीं होता है।

Unleash the topper in you

3. सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)

➢ यह वह कुल मौद्रिक मूल्य है, जो किसी देश के निवासियों द्वारा एक विशिष्ट अवधि के भीतर सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन से प्राप्त होता है, चाहे वह उत्पादन देश के भीतर हो या विदेश में। इसमें विदेश में किए गए निवेश से अर्जित आय को शामिल किया जाता है, लेकिन देश के भीतर विदेशी निवासियों द्वारा किए गए निवेश से होने वाली आय को घटाया जाता है।

GNP = GDP + विदेश से प्राप्त निवल आय (NFIA)

4. शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP)

- यह सकल राष्ट्रीय उत्पाद में से मूल्यह्रास को घटाने के बाद सृजित आय है।
- यह किसी देश की सबसे शुद्ध आय है।

NNP = GNP – मूल्यह्रास

5. प्रति व्यक्ति आय (PCI)

- प्रति व्यक्ति आय या प्रति व्यक्ति उत्पादन लोगों के जीवन स्तर को दर्शाने वाला एक संकेतक है
- इसे किसी देश की राष्ट्रीय आय को उसकी जनसंख्या से विभाजित करके प्राप्त किया जाता है।

प्रति व्यक्ति आय = एनएनपी/जनसंख्या

सकल घरेलू उत्पाद (GDP)	GDP = किसी देश के एक वित्तीय वर्ष में उत्पादित सभी वस्तुओं और सेवाओं का कुल योग।
शुद्ध घरेलू उत्पाद (NDP)	NDP = GDP – परिसंपत्तियों पर मूल्यह्रास।
सकल राष्ट्रीय उत्पाद (GNP)	GNP = GDP + विदेश से प्राप्त आय।
शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद (NNP)	NNP = GNP – परिसंपत्तियों पर मूल्यह्रास। NNP = GDP + विदेश से प्राप्त आय – परिसंपत्तियों पर मूल्यह्रास।

स्थिर मूल्यों पर प्रति व्यक्ति आय की वृद्धि दर वर्ष 1988-89 में सर्वाधिक (7.5%) थी जो वर्ष 2023-24 तक जारी रही।

6. व्यक्तिगत आय (PI)

- व्यक्तिगत आय वह कुल धनराशि है जो किसी देश के व्यक्तियों और परिवारों को प्रत्यक्ष करों के भुगतान से पहले सभी स्रोतों से प्राप्त होती है।

7. प्रयोज्य आय (DI)

- प्रयोज्य आय का अर्थ उस वास्तविक आय से है जिसे व्यक्तियों और परिवारों द्वारा उपभोग पर खर्च किया जा सकता है ।

DI = व्यक्तिगत आय (PI) – व्यक्तिगत कर भुगतान - गैर-कर भुगतान (जैसे जुर्माना)

भारत में GDP गणना व्यवस्था

- गणना के लिए आधार वर्ष को पिछले आधार वर्ष 2004-05 से परिवर्तित करके 2011-12 कर दिया गया है।

आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24

- वर्ष 2023-24 के लिए GDP (चालू कीमतों पर) - 295.36 लाख करोड़ रुपये
- वर्ष 2023-24 के लिए वास्तविक GDP वृद्धि दर - 8.2%
- वर्ष 2023-24 के लिए नाममात्र GDP वृद्धि दर - 9.6%
- GVA (चालू कीमतों पर) में अर्थव्यवस्था के क्षेत्रों का योगदान –

✓ कृषि (17.7%) ✓ उद्योग (27.6%) ✓ सेवाएं (54.7%)

सार्वजनिक और निजी वस्तु की अवधारणा

सार्वजनिक वस्तु: सार्वजनिक वस्तुएं वे वस्तुएं हैं जो गैर-बहिष्कृत और गैर-प्रतिद्वंद्वी होती हैं, अर्थात किसी को भी उनके उपयोग से वंचित नहीं किया जा सकता और एक व्यक्ति के उपयोग से दूसरे के लिए उनकी उपलब्धता कम नहीं होती। उदाहरण: राष्ट्रीय सुरक्षा, सार्वजनिक उद्यान, स्ट्रीट लाइट।

निजी वस्तु: निजी वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जो बहिष्कृत और प्रतिस्पर्धी हैं, जिन्हें कुछ लोगों को उपयोग करने से रोका जा सकता है और एक व्यक्ति के उपयोग से दूसरे के लिए उनकी उपलब्धता कम हो जाती है।

उदाहरण: कार, कपड़े आदि

आर्थिक विकास के मापक

1. मानव विकास सूचकांक (HDI)

मानव विकास सूचकांक (HDI) को 1990 में पाकिस्तानी अर्थशास्त्री महबूब-उल-हक ने भारतीय अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन के साथ मिलकर विकसित किया था। इस सूचकांक का उपयोग संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP) द्वारा देशों के विकास स्तर को मापने के लिए किया जाता है।

HDI जन्म के समय जीवन प्रत्याशा, वयस्क साक्षरता दर और जीवन स्तर का एक समग्र सूचकांक है जिसे सकल घरेलू उत्पाद के लघुगणकीय कार्य के रूप में मापा जाता है, जिसे क्रय शक्ति समता (PPP) में समायोजित किया जाता है।

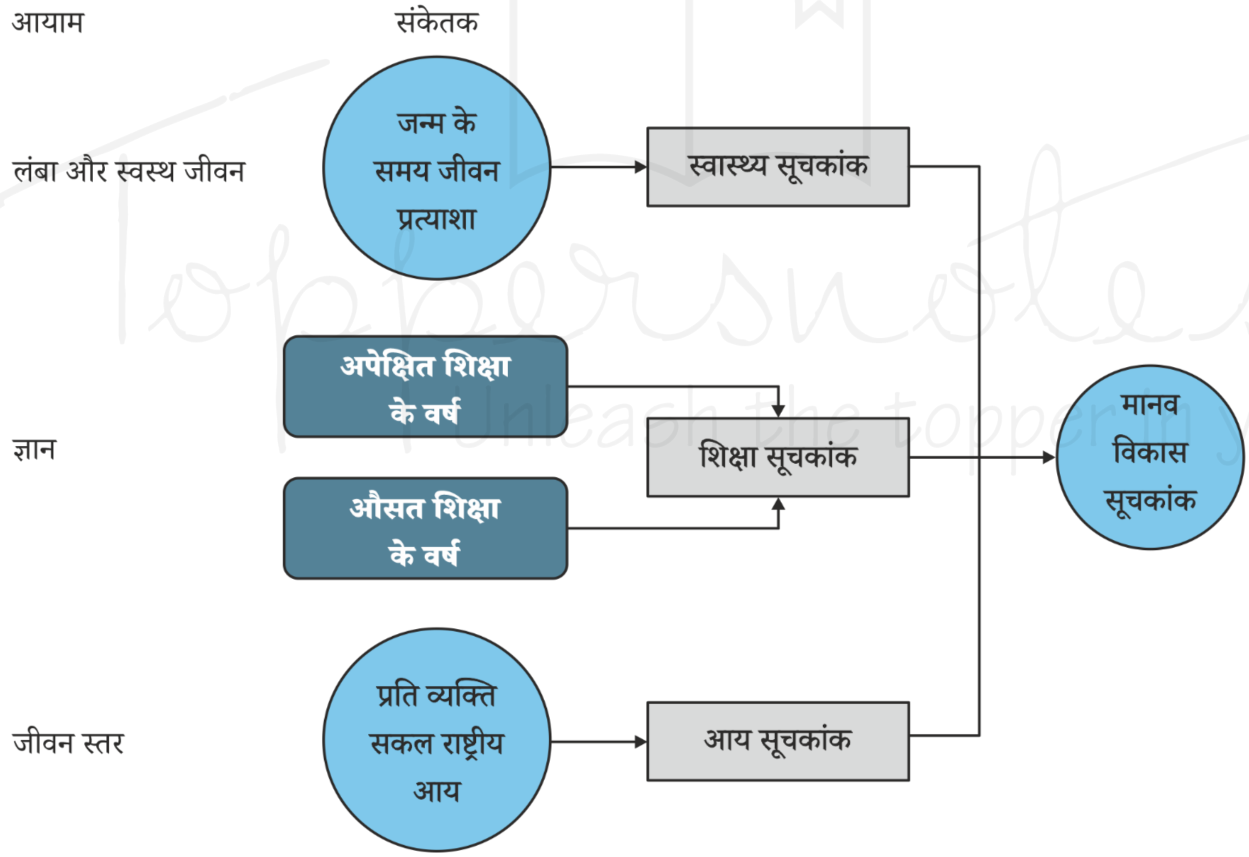

मानव विकास सूचकांक (HDI)- 2023-24

थीम: - "अवरोध को तोड़ना: ध्रुवीकृत विश्व में फिर से सहयोग की कल्पना।"("Breaking the Gridlock: Reimagining Cooperation in a Polarized World.")

विभिन्न सूचकांकों पर भारत का प्रदर्शन:

- भारत की रैंक: 134
- HDI स्कोर: 0.644
- भारत में जन्म के समय जीवन प्रत्याशा में थोड़ा सुधार हुआ है, यह 2021 में 67.2 वर्ष थी, जो 2022 में बढ़कर 67.7 वर्ष हो गई है।
- शिक्षा के अपेक्षित वर्षों में कुल 5.88% की वृद्धि हुई है, जो 11.9 वर्षों से बढ़कर 12.6 वर्ष हो गई है।

भारत के पड़ोसी देशों का प्रदर्शन:

- श्रीलंका (78), चीन (75), भूटान (125) और बांग्लादेश (129) स्थान पर हैं।
- नेपाल (146) और पाकिस्तान (164) भारत की अपेक्षा निम्न स्थान पर हैं।
- शीर्ष देश : स्विट्जरलैंड (0.967), नॉर्वे और आइसलैंड
- सबसे खराब प्रदर्शन: सोमालिया

2. विश्व प्रसन्नता सूचकांक – 2024

वार्षिक विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट गैलप (Gallup), ऑक्सफोर्ड वेलबीइंग रिसर्च सेंटर, यूएन सस्टेनेबल डेवलपमेंट सॉल्यूशंस नेटवर्क (SDSN) और विश्व प्रसन्नता सूचकांक के संपादकीय बोर्ड की साझेदारी से तैयार की जाती है।

- इस रिपोर्ट में छह मुख्य कारकों पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है: सामाजिक समर्थन, आय, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता, उदारता और भ्रष्टाचार की अनुपस्थिति।
- यह रिपोर्ट पिछले तीन वर्षों के औसत आंकड़ों (डेटा) के आधार पर एक प्रसन्नता (हैप्पीनेस) स्कोर देती है।

विश्व प्रसन्नता रिपोर्ट 2024 की मुख्य बातें:

- शीर्ष रैंकिंग: फिनलैंड लगातार सातवें वर्ष सूची में प्रथम स्थान पर है।
- सबसे खराब प्रदर्शन: अफगानिस्तान
- भारत की रैंक: 126
- भारत की प्रसन्नता सूचकांक रैंकिंग उसके पड़ोसी देशों जैसे चीन (60), नेपाल (93), पाकिस्तान (108), और म्यांमार (118) से निम्न स्थिति में है।

सकल राष्ट्रीय प्रसन्नता (GNH)

- देश के लोगों की ख़ुशी और कल्याण का एक पैमाना।
- GNH के चार स्तंभ हैं
  1. सतत और न्यायसंगत सामाजिक-आर्थिक विकास
  2. पर्यावरण संरक्षण
  3. संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन
  4. सुशासन
- GNH के नौ डोमेन मनोवैज्ञानिक कल्याण, स्वास्थ्य, समय का उपयोग, शिक्षा, सांस्कृतिक विविधता और लचीलापन, सुशासन, सामुदायिक जीवन शक्ति, पारिस्थितिक विविधता और लचीलापन और जीवन स्तर हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3. वैश्विक लैंगिक अंतर रिपोर्ट 2024(Global Gender Gap Report)

- यह रिपोर्ट वर्ष 2006 से विश्व आर्थिक मंच (WEF) द्वारा जारी की जाती है।
- इस रिपोर्ट में 146 देशों में लिंग समानता को चार क्षेत्रों में मापा जाता है:
  - ✓ आर्थिक भागीदारी और अवसर
  - ✓ शैक्षिक उपलब्धि
  - ✓ स्वास्थ्य और उत्तरजीविता
  - ✓ राजनीतिक सशक्तिकरण

वैश्विक लैंगिक अंतर सूचकांक 2024
भारत की रैंक: 129
(कुल देश 146)
प्रथम स्थान: आइसलैंड

बुनियादी शब्दावलियाँ

- वित्तीय वर्ष : यह 12 महीने की अवधि होती है जिसका उपयोग सरकारों और व्यवसायों द्वारा अपने लेखांकन और बजट की योजना बनाने के लिए किया जाता हैं, यह कैलेंडर वर्ष से भिन्न भी हो सकती है । उदाहरण के लिए, भारत में वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से शुरू होकर अगले वर्षके 31 मार्च तक चलता है।
- बाज़ार मूल्य: यह वह अंतिम मूल्य है जिस पर कोई उत्पाद बाज़ार में बेचा जाता है। इसमें सभी मध्यवर्ती लागतें, सब्सिडी और कर शामिल होते हैं, जो कीमत को प्रभावित करते हैं।
- साधन लागत (Factor Cost): यह किसी वस्तु या सेवा के उत्पादन में उपयोग या उपभोग किए गए सभी संसाधनों और कारकों की कुल लागत है। इसका मतलब उत्पादन में लगे कारक जैसे श्रम, पूंजी, भूमि, प्रबंधन आदि की लागत से है।
- आधार वर्ष : यह एक संदर्भ वर्ष होता है जिसका उपयोग समय के साथ आर्थिक और वित्तीय परिवर्तनों, जैसे मुद्रास्फीति GDP, आदि की तुलना करने के लिए किया जाता है। वर्तमान में भारत का आधार वर्ष 2011-12 है।
- स्थिर मूल्य : यह आधार वर्ष में प्रचलित कीमत को संदर्भित करता है
- मूल्यह्रास: उपयोग, टूट-फूट या अप्रचलन के कारण समय के साथ किसी पूंजीगत परिसंपत्ति के मौद्रिक मूल्य में कमी।
- वस्तुएं: यह वे भौतिक/मूर्त उत्पाद हैं जिन्हें छुआ और मापा जा सकता है। इसमें उपभोक्ता सामान (कपड़े, भोजन और इलेक्ट्रॉनिक्स) और पूंजीगत सामान (उत्पादन के लिए उपयोग की जाने वाली मशीनें और उपकरण जैसे कारखाने की मशीनें और वाहन) शामिल हैं।

सेवाएं: सभी अमूर्त गतिविधियाँ या लाभ जो उपभोक्ताओं को प्रदान की जाती हैं। इसमें

- व्यक्तिगत सेवाएं: जैसे बाल कटाना, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा
- व्यावसायिक सेवाएं: जैसे परामर्श, लेखांकन और कानूनी सेवाएं शामिल हैं।

अंतिम वस्तुएं और सेवाएं

- अंतिम वस्तुएं और सेवाएं वे वस्तुएं और सेवाएं हैं जिन्हें उपयोग या उपभोग के लिए तैयार किया जाता है।
- इन्हें पुनः उत्पादन प्रक्रिया में इस्तेमाल नहीं किया जाता।
- उदाहरण: भोजन, कपड़े, घर, परिवहन सेवाएं।

मध्यवर्ती वस्तुएं

Unleash the topper in you

- मध्यवर्ती वस्तुएं वे वस्तुएं और सेवाएं हैं जिनका उपयोग अन्य वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन के लिए किया जाता है।
- ये वस्तुएं अंतिम उपभोक्ता तक नहीं पहुंचतीं, बल्कि उत्पादन प्रक्रिया का हिस्सा होती हैं।
- उदाहरण: कच्चा माल, निर्माण सामग्री, अर्धनिर्मित उत्पाद।

नोट: वस्तुएं और सेवाएं मिलकर किसी अर्थव्यवस्था के उत्पादन का हिस्सा बनती हैं और ये उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं को पूरा करने और आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण होती हैं।

विकास अर्थशास्त्र में प्रमुख सिद्धांत

सिद्धांत	प्रस्तावक	संकल्पना
संपूर्ण लाभ का सिद्धांत	एडम स्मिथ	देश उन वस्तुओं के उत्पादन में विशेषज्ञता प्राप्त करें जिन्हें वे दूसरों की तुलना में अधिक कुशलता से बना सकते हैं, जिससे आर्थिक दक्षता और समृद्धि अधिकतम हो।
तुलनात्मक लाभ का सिद्धांत	डेविड रिकाडो	एक देश व्यापार से लाभ उठा सकता है यदि वह उन वस्तुओं के उत्पादन में विशेषज्ञता प्राप्त करे, जिन्हें वह कम अवसर लागत पर बना सकता है।
बिग पुश सिद्धांत	पॉल रोसेनस्टीन रोडन	विकासशील देशों में औद्योगीकरण और आर्थिक वृद्धि की बाधाओं को दूर करने के लिए कई क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर निवेश की आवश्यकता है।
निम्न-स्तरीय संतुलन जाल	रिचर्ड आर. नेल्सन	विकासशील देश कम आय, कम बचत और कम निवेश के चक्र में फंस सकते हैं, जिससे आर्थिक वृद्धि बाधित हो जाती है।
संतुलित वृद्धि का सिद्धांत	रेगनर नर्क्से	अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में एक साथ निवेश आवश्यक है ताकि संतुलित और टिकाऊ विकास सुनिश्चित हो सके।
असंतुलित वृद्धि का सिद्धांत	अल्बर्ट ओ. हर्शमैन	मुख्य क्षेत्रों में रणनीतिक निवेश आर्थिक वृद्धि को प्रेरित कर सकता है, जो अंततः अन्य क्षेत्रों में फैलता है।
निर्भरता सिद्धांत	आंद्रे गंडर फ्रैंक, पॉल बारन	निम्न-आय वाले देशों की गरीबी, अमीर देशों और बहुराष्ट्रीय निगमों द्वारा उनके शोषण का परिणाम है।
आर्थिक वृद्धि के चरण	वाल्ट रोस्टो	देश पाँच चरणों से गुजरते हैं: पारंपरिक समाज, स्वयं स्फूर्ति से पूर्व की दशा, स्वयं स्फूर्ति की दशा, परिपक्वता की ओर बढ़ना, और उच्च जन उपभोग का युग (Traditional Society, Preconditions for Take-off, Take-off, Drive to Maturity, and Age of High Mass Consumption.)।
आंतरिक वृद्धि सिद्धांत	पॉल रोमर, रॉबर्ट लुकास	आर्थिक वृद्धि मुख्य रूप से मानव पूंजी, नवाचार और ज्ञान जैसे आंतरिक कारकों द्वारा संचालित होती है, न कि बाहरी प्रभावों से।

unleash the topper in you

2 CHAPTER

मुद्रा, मुद्रा आपूर्ति और मौद्रिक नीति

मुद्रा वह वस्तु या साधन है जिसे व्यापक रूप से माध्यम विनिमय (Medium of Exchange), मूल्य मापन की इकाई (Unit of Account) और मूल्य संचय (Store of Value) के रूप में स्वीकार किया जाता है।
यह आर्थिक लेन-देन को सुगम बनाती है, क्योंकि यह मूल्य का मानकीकृत माप और भविष्य में भुगतान के माध्यम के रूप में कार्य करती है।

मुद्रा आपूर्ति

- किसी निश्चित समय पर जनता के बीच प्रचलन में कुल मुद्रा और धनराशि को मुद्रा आपूर्ति कहते हैं।
- मुद्रा आपूर्ति का अर्थ है अर्थव्यवस्था में किसी समय जनता के पास उपलब्ध धन की कुल मात्रा।
- मुद्रा आपूर्ति के मुख्य घटक:
  - ✓ जनता के पास मौजूद नकदी (Currency Held by the Public)
  - ✓ वाणिज्यिक बैंकों में शुद्ध मांग जमा (Net Demand Deposits)
- मुद्रा आपूर्ति आर्थिक गतिविधियों, मुद्रास्फीति और ब्याज दरों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- भारतीय अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति को सामान्यतः निम्नलिखित रूपों में मापा जाता है-

मौद्रिक समुच्चय	अवयव
M1	जनता के पास रखी मुद्रा(CU) + मांग जमाएँ + RBI के पास अन्य जमाएँ
M2	M1 + डाकघरों में रखी बचत जमाएँ
M3	M1 + वाणिज्यिक और सहकारी बैंकों में रखी सावधि जमाएँ (इंटरबैंक सावधि जमा को छोड़कर)।
M4	M3 + डाकघर बचत संगठनों सहित कुल जमा (राष्ट्रीय बचत प्रमाणपत्र को छोड़कर)।

- M1 और M2 को संकीर्ण मुद्रा (Narrow Money) तथा M3 और M4 को व्यापक मुद्रा (Broad Money) कहा जाता है।
- M1 सबसे अधिक तरल है जबकि M4 सबसे कम तरल है।
- M3, जिसे समग्र मुद्रा आपूर्ति भी कहा जाता है तथा यह मुद्रा आपूर्ति के लिए सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला मौद्रिक समुच्चय है। RBI, मौद्रिक नीति तैयार करते समय मुख्य रूप से इस समुच्चय पर ध्यान केंद्रित करती है।

मुख्य शब्दावली:

1. उच्च शक्तिशाली मुद्रा(High Powered Money):

   भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की कुल देनदारी को मौद्रिक आधार या उच्च शक्तिशाली धन कहा जाता है। इसमें निम्नलिखित शामिल हैं:

   - ✓ जनता के पास प्रचलन में मौजूद मुद्रा (नोट और सिक्के)।

✓ वाणिज्यिक बैंकों के पास उपलब्ध तिजोरी नकदी (Vault Cash)।

✓ भारत सरकार और वाणिज्यिक बैंकों द्वारा RBI के पास रखी जमा राशि।

➢ अर्थव्यवस्था में कुल धन आपूर्ति (Money Supply) उच्च शक्तिशाली धन से अधिक होती है क्योंकि वाणिज्यिक बैंक अपनी जमा राशि का एक हिस्सा ऋण के रूप में देकर अतिरिक्त धन का सृजन करते हैं।

2. मांग जमा (Demand Deposits):

➢ बैंक खातों में रखी गई वह धनराशि जिसे किसी भी समय निकाला जा सकता है, उसे मांग जमा कहते हैं।

✓ इसे चेक या डेबिट कार्ड के माध्यम से आसानी से निकाला जा सकता है।

✓ यह अत्यधिक तरल (Liquid) होती है।

उदाहरण: यदि किसी व्यक्ति के बचत खाते में ₹50,000 हैं, तो वह इसे किसी भी समय निकाल सकता है।

3. सावधि जमा (Time Deposits):

वह जमा राशि जिसे एक निर्धारित अवधि के बाद ही निकाला जा सकता है, सावधि जमा कहलाती है।

✓ यह जमा एक निश्चित अवधि के लिए होती है।

➢ इसे समय से पहले निकालने पर जुर्माना लग सकता है।

उदाहरण: फिक्स्ड डिपॉजिट (FD)

मौद्रिक नीति

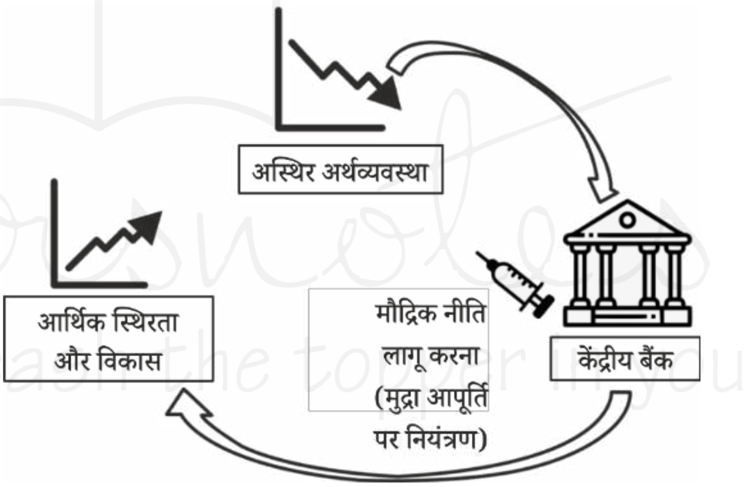

➢ मौद्रिक नीति एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे केंद्रीय बैंक द्वारा लागू किया जाता है ताकि मुद्रा आपूर्ति का प्रबंधन करके विशेष लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके, जैसे मुद्रास्फीति को नियंत्रित करना, उचित विनिमय दर बनाए रखना, रोजगार के अवसर सृजित करना, और आर्थिक विकास को बढ़ावा देना।

➢ इसमें खुले बाजार परिचालन(OMO), आरक्षित आवश्यकताओं या विदेशी मुद्रा व्यापार के माध्यम से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से ब्याज दरों में परिवर्तन करना शामिल है।

➢ मौद्रिक नीति विस्तारवादी या संकुचनकारी हो सकती है।

मौद्रिक नीति के प्रकार

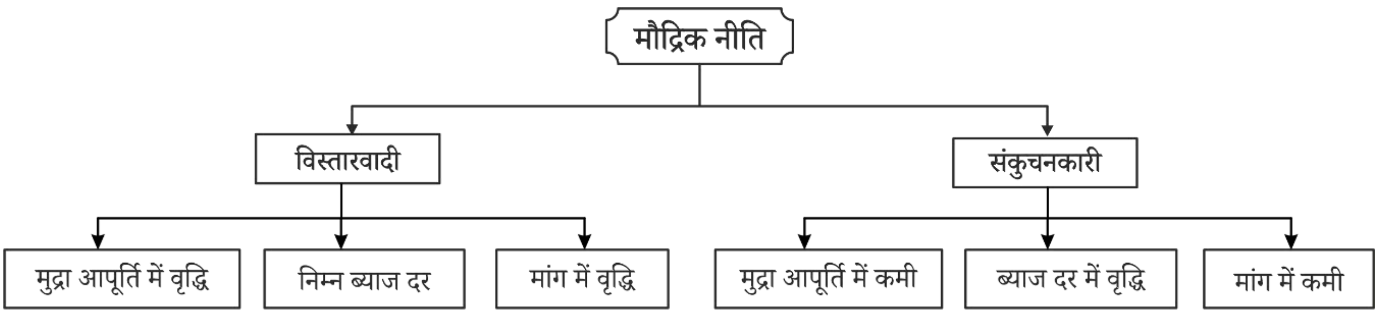

विस्तारवादी मौद्रिक नीति	संकुचनकारी मौद्रिक नीति
➢ लक्ष्य: अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति बढ़ाना। ➢ उपाय: प्रमुख ब्याज दरों में कटौती करके बाजार में तरलता बढ़ाना। ➢ यह नीति आमतौर पर मंदी के समय लागू की जाती है ताकि मुद्रा आपूर्ति बढ़े जिससे खपत को बढ़ावा मिले और मांग उत्पन्न हो सके। (राजकोषीय प्रोत्साहन) ➢ अन्य नाम: डोविश (Dovish) मौद्रिक नीति उदाहरण: मार्च, 2020 में देश में COVID-19 स्थिति के कारण।	➢ लक्ष्य: अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति घटाना। ➢ उपाय: प्रमुख ब्याज दरों में वृद्धि करके बाजार में तरलता कम करना। ➢ यह नीति मुद्रास्फीति की स्थिति में लागू की जाती है ताकि मुद्रा आपूर्ति घटे जिससे खपत कम हो और मांग नियंत्रित की जा सके। ➢ अन्य नाम: हॉकीश (Hawkish) मौद्रिक नीति

RBI और मौद्रिक नीति

- भारतीय रिज़र्व बैंक अधिनियम, 1934 के अनुसार, भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) को मौद्रिक नीति लागू करने का विशेष अधिकार प्राप्त है।
- हाल के वर्षों में भारत की मौद्रिक नीति के निर्माण में कई महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं, जिनमें मौद्रिक नीति ढांचा (MPF), मौद्रिक नीति समिति MPC) और मौद्रिक नीति प्रक्रिया (MPP) का समावेश शामिल है।

मौद्रिक नीति ढांचा (MPF)

मई 2016 में, केंद्रीय बैंक को देश की मौद्रिक नीति के प्रबंधन के लिए विधायी शक्ति देने के लिए RBI अधिनियम में संशोधन किया गया । यह ढांचा वर्तमान आर्थिक स्थितियों के आधार पर नीति (रेपो दर) निर्धारित करने और मुद्रा बाजार दरों को रेपो दर के आसपास रखने हेतु तरलता को समायोजित करने पर केंद्रित है। रेपो दर में परिवर्तन मुद्रा बाजार के माध्यम से संपूर्ण वित्तीय प्रणाली को प्रभावित करता है, जिससे कुल मांग प्रभावित होती है, जो मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण है।

मौद्रिक नीति समिति (MPC)

- MPC छह सदस्यीय समिति है, जिसे केंद्रीय सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है।
- यह समिति भारत में मुद्रास्फीति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतिगत ब्याज दर निर्धारित करती है।
- इस समिति का गठन रघुराम राजन द्वारा किया गया था।
- MPC को वर्ष में कम से कम चार बार बैठक करनी होती है तथा गणपूर्ति के लिए चार सदस्यों की उपस्थिति आवश्यक है।
- प्रत्येक सदस्य का एक वोट होता है, और यदि वोट बराबर हो जाए, तो गवर्नर को निर्णायक वोट (casting vote) का अधिकार होता है।
- प्रत्येक MPC बैठक के समापन पश्चात्, अपनाए गए संकल्प को प्रकाशित किया जाता है।

> नोट: मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण
>
> - 2016 में अपनाई गई इस नीति के तहत भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने ±2% की सहिष्णुता बैंड (tolerance band) के साथ मुद्रास्फीति का लक्ष्य 4% निर्धारित किया है।
> - यह नीति RBI को आर्थिक परिस्थितियों, जैसे विकास और मुद्रास्फीति के रुझानों के आधार पर अपनी मौद्रिक नीति में आवश्यकतानुसार बदलाव करने की अनुमति देती है।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

मौद्रिक नीति समिति, 2016

- स्थापना: 2016
- अनुशंसित: उर्जित पटेल समिति ,2015 द्वारा
- उद्देश्य: मौद्रिक नीति के निर्णयों में पारदर्शिता और जवाबदेही लाना।
- कार्य: मुद्रास्फीति के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक नीतिगत ब्याज दर निर्धारित करना।
- मुद्रास्फीति लक्ष्य: प्रति पांच वर्ष में एक बार तय किया जाता है।
  - ✓ भारत सरकार, भारतीय रिजर्व बैंक के परामर्श से इसे तय करती है।
  - ✓ RBI की मुद्रा और वित्त रिपोर्ट (RCF) 2020-21 के अनुसार, वर्तमान मुद्रास्फीति लक्ष्य बैंड (4% ± 2%) अगले पांच वर्षों (2020-2025) के लिए उपयुक्त माना गया है।

आयाम	विवरण
संरचना	सदस्य: 6 सदस्य (3 RBI से और 3 भारत सरकार से) अध्यक्ष: RBI गवर्नर उपाध्यक्ष: RBI के डिप्टी गवर्नर

मौद्रिक नीति के उपकरण

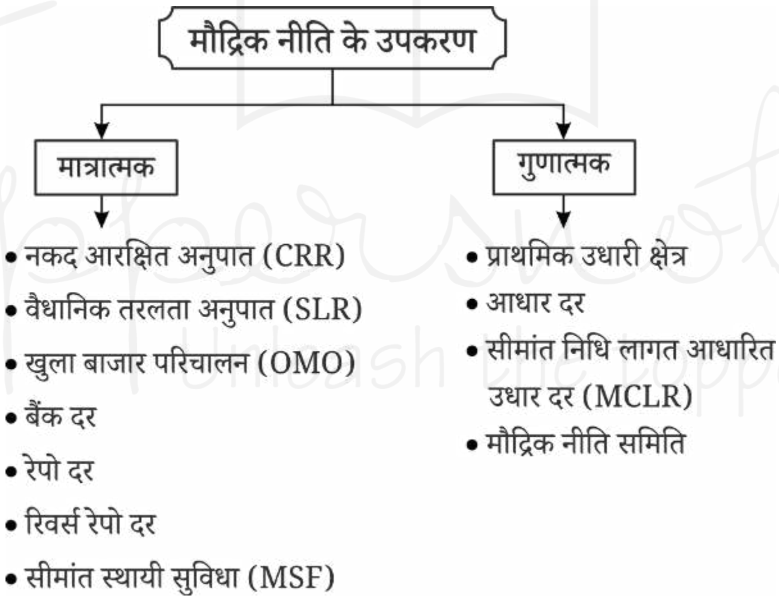

1. मात्रात्मक उपकरण

उपकरण	विवरण
नकद आरक्षित अनुपात (CRR)	➢ इसे मौद्रिक नीति समिति द्वारा निर्धारित किया जाता है। ➢ बैंकों को अपनी शुद्ध मांग और सावधि देयताओं (NDTL) का एक निश्चित प्रतिशत, रिजर्व बैंक के पास जमा करना होता है। ➢ यह राशि नकद (Cash) के रूप में RBI के पास जमा की जाती है। **Net Demand and time liability (NDTL):** बैंक के पास कुल जमा की गणना सावधि जमा के साथ चालू/बचत जमा को जोड़कर की जाती है

	➢ ब्याज: RBI के पास जमा धन पर बैंकों को कोई ब्याज नहीं मिलता है। ➢ वर्तमान स्थिति: 4.50% (अप्रैल 2024) ➢ प्रभाव: ➢ CRR में वृद्धि: ✓ यदि RBI, CRR बढ़ाता है, तो वाणिज्यिक बैंकों को अधिक धनराशि RBI के पास जमा करनी होगी, जिससे उनके पास ग्राहकों को ऋण देने के लिए कम धनराशि बचेगी। ✓ परिणाम: अर्थव्यवस्था में धन की आपूर्ति कम हो जाएगी। ➢ CRR में कमी: ✓ यदि RBI, CRR घटाता है, तो वाणिज्यिक बैंकों को कम धनराशि RBI के पास जमा करनी होगी, जिससे उनके पास ग्राहकों को ऋण देने के लिए अधिक धनराशि बचेगी। ✓ परिणाम: अर्थव्यवस्था में धन की आपूर्ति बढ़ जाएगी। आरक्षित अनुपात = CRR + SLR
वैधानिक तरलता अनुपात (SLR)	➢ बैंकों को अपनी जमा राशि का एक निश्चित प्रतिशत अत्यधिक तरल सरकारी प्रतिभूतियों (सोना, नकद या सरकारी प्रतिभूतियों) के रूप में रखना होता है। ➢ इसे सरकारी प्रतिभूति के रूप में रखा जाता है। ➢ यह सुरक्षा राशि होती है, जिस पर बैंक को RBI से ब्याज मिलता है। ➢ 2007 का संशोधन: ➢ भारत सरकार ने 2007 में SLR की न्यूनतम सीमा को संशोधित कर 25% निर्धारित किया। ➢ इस संशोधन ने बैंकों को अपनी निधियों के साथ अधिक लचीलापन (Flexibility) प्रदान किया। ➢ वर्तमान स्थिति: 18% (अप्रैल 2024) ➢ आरक्षित अनुपात = CRR + SLR ➢ प्रभाव: ➢ SLR में वृद्धि: ➢ यदि RBI, SLR बढ़ाता है, तो वाणिज्यिक बैंकों के पास ग्राहकों को ऋण देने के लिए कम धनराशि बचेगी। ✓ इससे बैंकों की तरलता (Liquidity) कम हो जाती है, और अर्थव्यवस्था में धन आपूर्ति घटती है। ✓ कम तरलता के कारण बैंकों द्वारा ऋण देना कठिन हो जाता हैं, और यह ब्याज दरों में वृद्धि कर सकता है। ➢ SLR में कमी: ➢ यदि RBI, SLR घटाता है, तो वाणिज्यिक बैंकों के पास ग्राहकों को ऋण देने के लिए अधिक धनराशि उपलब्ध होगी। ✓ इससे बैंकों की तरलता बढ़ती है, जिससे अर्थव्यवस्था में धन आपूर्ति में वृद्धि होती है। ✓ अधिक धनराशि होने पर बैंक प्रतिस्पर्धा के कारण ऋण दरों (Lending Rates) को कम कर सकते हैं।

खुला बाजार परिचालन (OMO)	➢ बाजार में मुद्रा आपूर्ति को नियंत्रित करने के लिए RBI द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय/विक्रय। सरकारी प्रतिभूतियाँ (G-Sec) प्रतिभूति की परिपक्वता पर निवेशित मूलधन के पूर्ण पुनर्भुगतान का वादा। इस प्रकार सरकार विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त करती है। ➢ G-Sec विक्रय: बाजार में मुद्रा आपूर्ति कम होती है। ✓ RBI मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए प्रतिभूतियाँ बेचती है। ➢ G-Sec क्रय: बाजार में मुद्रा आपूर्ति बढ़ती है । ✓ RBI अर्थव्यस्था में तरलता प्रवाहित करके अपस्फीति को नियंत्रित करने के लिए प्रतिभूतियां खरीदता है
बैंक दर	➢ वह दर जिस पर वाणिज्यिक बैंक मुद्रा भंडार की कमी के चलते RBI से पैसा उधार लेते हैं। ➢ RBI ने बैंक दर को रेपो दर से 0.25% अधिक निर्धारित किया है। ➢ वर्तमान स्थिति: 6.75% (अप्रैल 2024) प्रभाव: ➢ बैंक दर में वृद्धि: यदि RBI बैंक दर बढ़ाता है, तो वाणिज्यिक बैंकों के लिए धन उधार लेना महंगा हो जाता है। ✓ परिणाम: अर्थव्यवस्था में धन की आपूर्ति कम हो जाती है। ➢ बैंक दर में कमी: यदि RBI बैंक दर घटाता है, तो वाणिज्यिक बैंकों के लिए धन उधार लेना सस्ता हो जाता है। ✓ परिणाम: अर्थव्यवस्था में धन की आपूर्ति बढ़ जाती है।
सीमांत स्थायी सुविधा (MSF)	➢ आपातकालीन स्थिति जब अंतर-बैंक तरलता पूरी तरह से समाप्त हो जाती है, उस स्थिति में वाणिज्यिक बैंकों के लिए RBI से उधार लेने की सुविधा । ➢ इसकी दर हमेशा रेपो दर से अधिक निर्धारित की जाती है। ➢ वर्तमान स्थिति: 6.75% (अप्रैल 2024)
रेपो दर	➢ वह दर जिस पर RBI वाणिज्यिक बैंकों को उनकी अल्पकालिक (90 दिनों तक) तरलता आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ऋण देती है ✓ बाद में उन्हीं सरकारी परिसंपत्तियों को पुनः खरीदती है। ➢ वर्तमान स्थिति: 6.50% (अप्रैल 2024) ➢ यह दर दो प्रकार की होती है : ✓ ओवरनाइट रेपो: 24 घंटे के लिए उधार लिया जाता है ✓ टर्म रेपो: 7,14,21 आदि दिनों के लिए उधार लिया जाता है प्रभाव 1. रेपो दर घटाना: ✓ यदि RBI रेपो दर कम करता है, तो वाणिज्यिक बैंकों के लिए RBI से धन उधार लेना सस्ता हो जाता है।

	✓ परिणाम: ▪ उधार लेना बढ़ता है। ▪ खर्च और निवेश में वृद्धि होती है। ▪ अर्थव्यवस्था को गति मिलती है। 2. रेपो दर बढ़ाना: ✓ यदि RBI रेपो दर बढ़ाता है, तो वाणिज्यिक बैंकों के लिए RBI से धन उधार लेना महंगा हो जाता है। ✓ परिणाम: ▪ उधार लेना कम हो जाता है। ▪ खर्च और निवेश में कमी आती है। ▪ अर्थव्यवस्था में धन की आपूर्ति घटती है, जिससे मुद्रास्फीति पर नियंत्रण पाया जाता है।
रिवर्स रेपो दर	➢ इस दर के तहत RBI रातों-रात बैंकों से तरलता को अवशोषित करती है ✓ इसका उपयोग LAF के अंतर्गत संपार्श्विक के रूप में रखी गई योग्य सरकारी प्रतिभूतियों के बदले में किया जाता है । ➢ इसकी दर रेपो दर से कम होती है । ➢ वर्तमान स्थिति: 3.35% (अप्रैल 2024) प्रभाव 1. रिवर्स रेपो दर बढ़ाना: ✓ जब RBI रिवर्स रेपो दर बढ़ाता है, तो वाणिज्यिक बैंकों को अपनी धनराशि RBI के पास जमा करने पर अधिक ब्याज मिलता है। ✓ परिणाम: ▪ बैंक अपनी अतिरिक्त धनराशि RBI के पास जमा करने के लिए प्रोत्साहित होते हैं। ▪ इससे बैंकों के पास ग्राहकों को उधार देने और खर्च करने के लिए कम धनराशि बचती है। ▪ अर्थव्यवस्था में धन की आपूर्ति कम हो जाती है। 2. रिवर्स रेपो दर घटाना: ✓ जब RBI रिवर्स रेपो दर घटाता है, तो बैंकों को अपनी धनराशि RBI के पास जमा करने पर कम ब्याज मिलता है। ✓ परिणाम: ▪ बैंक अधिक धनराशि उधार देने और निवेश करने के लिए प्रेरित होते हैं। ▪ इससे आर्थिक गतिविधियां बढ़ती हैं। ▪ अर्थव्यवस्था में धन की आपूर्ति बढ़ती है।

गुणात्मक उपकरण

गुणात्मक उपकरण (जैसे कि प्राथमिक क्षेत्र ऋण (PSL) और ऋण-से-मूल्य (LTV) अनुपात) अर्थव्यवस्था के विशिष्ट क्षेत्रों के ऋण आवंटन को विनियमित करते हैं। मात्रात्मक उपकरणों के विपरीत जो, ऋणों की समग्र मात्रा का प्रबंधन करते है गुणात्मक उपकरण इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि ऋण किस प्रकार से वितरित हो रहा है।

Unleash the topper in you

उपकरण	विवरण
मार्जिन आवश्यकताएँ/ ऋण-से-मूल्य (Loan to Value)	➢ मार्जिन का तात्पर्य ऋणों के लिए दी गई प्रतिभूतियों के मूल्य और वास्तव में दिए गए ऋणों के मूल्य के बीच अंतर से है। उदाहरण: यदि गिरवी रखी गई संपत्ति का मूल्य ₹1 लाख है और LTV 80% है, तो अधिकतम ₹80,000 ही ऋण के रूप में दिया जा सकता है। ➢ RBI मांग को बढ़ाने या कम करने के लिए इस प्रतिशत को बदल सकती है। ➢ यदि आरबीआई किसी विशेष क्षेत्र में ऋण के प्रवाह को नियंत्रित करना चाहता है, तो वह उस क्षेत्र के लिए उच्च मार्जिन तय करता है। परिणामस्वरूप, ग्राहक उस क्षेत्र के लिए कम ऋण लेंगे।
उपभोक्ता ऋण विनियमन (Consumer Credit Regulation)	➢ उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की खरीद के लिए वाणिज्यिक बैंकों द्वारा उपलब्ध कराया गया ऋण (किस्तों में) उपभोक्ता ऋण के रूप में जाना जाता है। ➢ यदि कुछ उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की अतिरिक्त मांग होती है जिसके कारण उनकी कीमतें ऊंची हो जाती हैं, तो आरबीआई निम्लिखित उपाय द्वारा उपभोक्ता ऋण को कम कर देता है: 1. डाउन पेमेंट बढ़ा कर, और/या 2. ऐसे क्रेडिट के पुनर्भुगतान की किस्तों की संख्या कम कर।
प्राथमिक उधारी क्षेत्र	➢ RBI यह सुनिश्चित करता है कि बैंक अपनी निधियों का एक निश्चित हिस्सा कुछ विशेष क्षेत्रों में आवंटित करें। ➢ उदाहरण: कृषि, सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME), निर्यात ऋण, शिक्षा, आवास, सामाजिक बुनियादी ढांचा, तथा नवीकरणीय ऊर्जा आदि।
नैतिक अनुनय	➢ RBI निर्देश जारी करता है, बैठकें करता है, अनुनय और दबाव का उपयोग करता है, निरीक्षण करता है, और नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए नियमित रूप से अनुवर्ती कार्रवाई करता है।
प्रत्यक्ष कार्रवाई	जब कोई वाणिज्यिक बैंक आरबीआई के साथ सहयोग नहीं करता है तो RBI सीधी कार्रवाई करता है जैसे: ➢ जुर्माना लगाना ➢ असहयोगी बैंकों पर प्रतिबंध लगाना ➢ अपने बिलों में पुनः छूट देने से इंकार करना ➢ ऋण आपूर्ति से वंचित करना
आधार दर	➢ यह वह न्यूनतम दर है जिसके नीचे बैंक उपभोक्ताओं को ऋण नहीं दे सकते।
सीमांत निधि लागत आधारित उधार दर (MCLR)	➢ यह वह न्यूनतम ब्याज दर है जिस पर बैंक ऋण देते हैं। यह आंतरिक रूप से निर्धारित बेंचमार्क दर है, जो शेष ऋण पुनर्भुगतान अवधि के आधार पर तय होती है।

उपकरणों और मुद्रास्फीति के मध्य संबंध

उपकरण	मुद्रास्फीति के समय	अपस्फीति के समय
आरक्षित अनुपात (CRR, SLR)	बढ़ाएँ	घटाएं
खुला बाजार परिचालन (OMO)	RBI द्वारा नकदी/तरलता जुटाने के लिए प्रतिभूतियां को बेचना	RBI द्वारा बाजार में नकदी की आपूर्ति के लिए प्रतिभूतियां खरीदना
बैंक दर	बढाएं	घटाएं
रेपो दर	बढाएं	घटाएं
रिवर्स रेपो दर	इसका मूल्य रेपो के साथ जुड़ा हुआ है, इसलिए इसे स्वतंत्र रूप से बढ़ाया/घटाया नहीं जा सकता है।	
सीमांत स्थायी सुविधा (MSF)	इसका मूल्य रेपो से जुड़ा हुआ है, इसलिए इसे स्वतंत्र रूप से बदला नहीं जा सकता। इसके अलावा MSF = अस्थायी अग्निशमन, नकदी कुप्रबंधन।	

RBI द्वारा नीतिगत रुख

RBI के विभिन्न नीतिगत रुख	
समायोजक (Accommodative)	➢ केंद्रीय बैंक आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए मुद्रा आपूर्ति को बढ़ाता है। ➢ इसमें ब्याज दरों में कटौती की जाती है, लेकिन दरों में वृद्धि की संभावना नहीं होती है । ➢ यह तब अपनाया जाता है जब वृद्धि को नीति समर्थन की आवश्यकता होती है और मुद्रास्फीति तत्काल चिंता का विषय नहीं होती।
तटस्थ (Neutral)	➢ केंद्रीय बैंक व्यापक आर्थिक स्थितियों के आधार पर ब्याज दरों को कम या बढ़ा सकता है।
आक्रामक (हॉकिश)	➢ इस रुख में केंद्रीय बैंक की प्राथमिकता मुद्रास्फीति को कम रखना होता है। ➢ बैंक मुद्रा आपूर्ति को कम करने के लिए ब्याज दरों में वृद्धि कर सकती है, जिससे मांग को नियंत्रित किया जा सकता है। ➢ यह सख्त मौद्रिक नीति का संकेत देती है।
अंशांकित (कैलिब्रेटेड) कसावट	➢ दर में वृद्धि एक सुनियोजित तरीके से की जाती है। ➢ बैंक हर बार दरों में वृद्धि नहीं करता, लेकिन बढ़ोतरी की प्रवृत्ति रहती है।

नोट: मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण

- 2016 में अपनाई गई इस नीति के तहत भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने ±2% की सहनशीलता बैंड के साथ मुद्रास्फीति का लक्ष्य 4% निर्धारित किया है।
- यह नीति RBI को आर्थिक परिस्थितियों, जैसे विकास और मुद्रास्फीति के रुझानों के आधार पर अपनी मौद्रिक नीति में आवश्यकतानुसार बदलाव करने की अनुमति देती है।